2.1.3. विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण (Classification Exceptional Children)

विशिष्टता का क्षेत्र सार्वभौमिक है। यह किसी भी वर्ग, जाति, धर्म, समुदाय व राष्ट्र के व्यक्तियों में पाई जा सकती है। कभी यह विशिष्टता वंशानुगत, कभी वातावरण तथा कभी दोनों के संयोजन का प्रतिफल होती है। शारीरिक, मानसिक, संवेगा भावात्मक तथा सामाजिक विकास आदि में विभिन्नता के आधार पर विशिष्ट बालक अनेक प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं–

1) **शारीरिक रूप से भिन्न बालक**
   i) सांवेदिक रूप से विकलांगता
   ii) गतीय रूप से विकलांगता
   iii) बहुल विकलांगता

2) **मानसिक रूप से भिन्न बालक**
   i) प्रतिभाशाली बालक
   ii) सृजनात्मक बालक
   iii) मन्दबुद्धि बालक

3) **शैक्षिक रूप से भिन्न बालक**
   i) शैक्षिक रूप से समृद्ध बालक
   ii) शैक्षिक रूप से पिछड़ा बालक
   iii) किसी प्रमुख विषय को सीखने में अयोग्य बालक
   iv) सम्प्रेषण बाधित बालक

4) **सामाजिक रूप से विचलित बालक**
   i) सांवेगिक रूप से परेशान बालक
   ii) माता–पिता द्वारा तिरस्कृत बालक
   iii) बाल अपराधी
   iv) समस्यात्मक बालक
   v) वंचित बालक
   vi) असमायोजित बालक

2.2. संवेदी एवं विकलांग बालक (SENSORY AND PHYSCIALLY CHALLENGED CHILDREN)

हमारे शरीर की प्रक्रिया में विभिन्न तन्तुओं के जाल द्वारा विभिन्न सूचनाओं का आदान प्रदान होता है। इन ज्ञानवाही तन्तुओं में एक शिरा ग्राहक तथा दूसरा संवेदी केन्द्र होता है जिनके द्वारा मस्तिष्क तक सूचनाएँ पहुँचाई जाती हैं। बालक अपनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से कार्य करना आरम्भ करता है जिससे उसे विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है तब इस ज्ञान को संवेदी ज्ञान कहते हैं।

Scanned with CamScanner

संवेदी सबसे साधारण मानसिक प्रक्रिया का सबसे सामान्य रूप है जो ज्ञान प्राप्ति में सहायक हैं। **वार्ड** ने लिखा है कि– शुद्ध संवेदना मनोवैज्ञानिक कल्पना है।

जेम्स के अनुसार, "संवेदी अंग ज्ञान मार्ग में पहली वस्तुएँ हैं।"

अतः विभिन्न आवश्यकता वाले बालक विभिन्न संवेदी अंगों के द्वारा विभिन्न तथ्यों को महसूस करते हैं। इन बालकों के विभिन संवेदनाएँ **जैसे**– दृष्टि, ध्वनि, घृणा, स्वाद, स्पर्श, मांसपेशी एवं शारीरिक होती हैं। इनके द्वारा छात्र विभिन्न तथ्यों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी ग्रहण कर सकते हैं परन्तु कभी–कभी कुछ कारणों से बालक में इन संवेदी अंगों सम्बन्धी अपंगता हो जाती है। इस प्रकार के बालकों को विशिष्ट रूप से शिक्षा एवं सेवाएँ प्रदान करने की आवश्यकता होती है। इनमें से कुछ संवेदी बाधित बालकों को उल्लेख निम्नलिखित है–

1) श्रवण बाधित बालक
2) दृष्टिबाधित बालक

2.2.1. श्रवण बाधित बालक का अर्थ एवं अवधारणा (Meaning and Concept of Hearing Impaired Children)

श्रवण बाधित बालक वे बालक कहे जाते हैं जिनकी सुनने की क्षमता नष्ट हो जाती है। उन्हें भाषा बोलने तथा समझने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सभी बालकों की श्रवण बाधित क्षमता समान नहीं होती है। जिन बालकों की सुनने की क्षमता बिल्कुल नहीं होती है वे अन्य बालकों की अपेक्षा गम्भीर रूप से कठिनाईयों का सामना करते हैं। अतः श्रवण बाधित बालक उन्हें कहते हैं जो बालक आंशिक सुन नहीं पाते हैं या पूर्णतः सुन ही नहीं पाते हैं।

जो बालक श्रवण क्षमता को कुछ सीमा तक खो देते हैं वे कम सुनने वाले बालक कहे जाते हैं, ऐसे बालक जोर से की गई ध्वनि अथवा आवाज को सुन सकते हैं। तेज आवाज सुनने के लिए उन्हें श्रवण यन्त्र की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यदि ऐसे बालकों को श्रवण यन्त्र उपलब्ध हो तो वे आवाज को और अच्छी तरह से सुन एवं समझ सकते हैं। ऐसे बालकों को सामान्य स्कूलों में तथा सामान्य बालकों के साथ शिक्षा देने में कठिनाई नहीं आती है। इस प्रकार के अधिकाँश बालक सामान्य शिक्षा कक्ष में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्रवण बाधित या श्रवण दोषयुक्त बालक को श्रवण प्रशिक्षण तथा श्रवण यन्त्र की विशेष रूप से आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों को शिक्षण परिस्थितियों में सुनाने की अपेक्षा वस्तुओं को दिखाकर शिक्षा दी जानी चाहिए। ऐसे बालकों की कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विशेषज्ञों, जैसे– ऑडियोलॉजिस्ट तथा नाक, कान एवं गले के चिकित्सक उपलब्ध होने चाहिए। इस प्रकार के बालकों की विशिष्ट आवश्यकताएँ उनकी श्रवण क्षमता के कम होने की सीमा एवं प्रकार पर निर्भर करती है। विशेषज्ञों की आवश्यकता बालक के द्वारा घर पर अथवा स्कूल में दिए गए प्रशिक्षण पर भी निर्भर करती है। साधारणतः श्रवण बाधित में वाणी बाधित का भी दोष पाया जाता है। इस प्रकार श्रवण बाधित बालक अक्सर वाणी बाधित होते हैं। श्रवण बाधित बालक की श्रवण इन्द्रिय सामान्य रूप से कार्य नहीं करती है। इसलिए सुनने में कठिनाई होती है। ऐसे बालक सहायक यन्त्रों का प्रयोग करके अपना काम चला लेते हैं। ये बालक सामान्य बालकों के साथ पढ़–लिख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

2.2.1.1. श्रवण बाधित बालकों के लक्षण (Symptoms of He Impaired Children)

श्रवण बाधित बालकों के निम्नलिखित व्यावहारिक लक्षण होते हैं–

1) श्रवण बाधित बालक गतिविधियों एवं कार्यों के प्रति अधिक सजग रहते हैं तथा पर ध्यान नहीं दे पाते हैं।
2) शिक्षक के होंठों की गतिविधि और उसके हाव–भाव पर ध्यान देते हैं।
3) एक तरफ सिर झुकाकर सुनने का प्रयास करते हैं।
4) व्यवहार में एकाग्रता एवं निरन्तरता नहीं होती।
5) शिक्षक से प्रश्नों को बार–बार दोहराने के लिए कहते हैं।
6) समान ध्वनि के शब्दों में उसे अक्सर भ्रम होता है।
7) कक्षा में ध्वनि के स्रोत नहीं जान पाते।
8) शब्दों के सही उच्चारण में भी उसे कठिनाई होती है।
9) बिना जानकारी के भी वार्ता के बीच में निर्रथक बोल पड़ता है।
10) बिना जानकारी के भी कुछ बड़बड़ाता रहता है।
11) शाब्दिक निर्देशनों को समझने में और अनुसरण करने में कठिनाई होती है।
12) अधिक धीरे बोलता है।

2.2.1.2. श्रवण बाधित बालकों की विशेषताएँ (Characteristics Hearing Impaired Children)

श्रवण बाधित बालक में व्यावहारिक लक्षणों के साथ अन्य गुण भी प्रभावशील होते हैं। किसी को दृष्टिहीन और बहरे व्यक्ति में से किसी एक का चयन करना हो तो वह व्यक्ति का चयन करेगा क्योंकि वह चलने–फिरने में एवं सांकेतिक भाषा से अपनी को कह लेता है। दृष्टिहीन की अपेक्षा श्रवणबाधित अधिक क्रियाशील होते हैं। ऐसे ब में पाँच प्रकार की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ होती हैं–

1) **भाषा तथा वाणी का विकास (Language and Speech Development)**– बाधित बालक में भाषा एवं वाणी के विकास से सम्बन्धित निम्नलिखित विशे होती हैं–
   i) श्रवण बाधित बालकों का भाषा सीखने और बोलने के कौशल पर गम्भीर होता है।
   ii) श्रवण बाधित बालक का भाषा के उच्चारण में अधिक दोष होता है।
   iii) इनमें गहन प्रशिक्षण के द्वारा भाषा का सामान्य विकास हो पाता है।
   iv) जन्म से ही बहरे होने वाले बालकों में विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती
   v) ऐसे बालकों की अभिवृत्ति ऐसी होती है कि वे अपने को बोलने में अ समझने लगते हैं, लेकिन यह कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।
   vi) श्रवण बाधित बालकों की सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि ऐसे बालक भाषा का सामान्य विकास नहीं होता है।
   vii) इस प्रकार के बालक बहुत कम ही भाषा का प्रयोग कर पाते हैं।

2) **शैक्षिक निष्पत्ति का विकास (Development of Educational Achievemen**
   शैक्षिक निष्पत्ति का विकास इस प्रकार के बालकों में निम्नलिखित रूप से होता है–
   i) शैक्षिक निष्पत्ति की दृष्टि में ऐसे बालकों में अधिक भिन्नता पाई जाती है।
   ii) ऐसे बालकों का बौद्धिक स्तर ऊँचा होता है परन्तु फिर भी शैक्षिक उपल अधिक नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

iii) इन बालकों को पढ़ाने में भी कठिनाई होती है क्योंकि इनमें भाषा का सही विकास नहीं हो पाता है।

iv) इनमें से कुछ ही बालक भाषा को बोधगम्य कर पाते हैं और पुस्तकों का अध्ययन कर लेते हैं।

v) शैक्षिक निष्पत्ति की स्थिति ऐसे बालकों की अच्छी नहीं होती क्योंकि शैक्षिक निष्पत्ति में शाब्दिक योग्यता की अहम् भूमिका होती है।

3) **बौद्धिक योग्यता का विकास (Intellectual Development)**–इन बालकों की बौद्धिक योग्यता के विकास की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

i) श्रवण बाधित बालकों का मानसिक विकास सामान्य बालकों के समान ही होता है।

ii) इन बालकों की चिन्तन शक्ति सामान्य बालकों के जैसे ही होती है।

iii) इस प्रकार के बालकों के कार्य सामान्य बालकों के जैसे ही होते हैं।

iv) इस प्रकार के बालकों में मानसिक मन्दिता नहीं होती है, भाषा के अतिरिक्त अन्य सभी समस्याओं एवं परिस्थितियों को समझ लेते हैं।

v) भाषा कौशल की दृष्टि से इन्हें मन्दित बालक कहा जा सकता है लेकिन ये अशाब्दिक भाषा बौद्धिक कार्य करने में सक्षम होते हैं।

vi) बौद्धिक अशाब्दिक परीक्षा में इनकी बुद्धिलब्धि उच्च स्तर की होती है।

4) **सामाजिक तथा व्यावसायिक समायोजन (Social and Occupational Adjustment)**–श्रवण बाधित बालकों की सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन सम्बन्धी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

i) श्रवण बाधित बालकों की सामाजिक और व्यावसायिक विशेषताएँ सामान्य बालकों से भिन्न होती हैं।

ii) ऐसे बालकों में पारस्परिक सम्प्रेषण की समस्या होती है एवं शाब्दिक अन्तःक्रिया नहीं होती है।

iii) सम्प्रेषण की समस्याओं के कारण समाज में इनकी अन्तःक्रिया नहीं हो पाती है, जिससे ये अलग समाज में रहते हैं।

iv) इस प्रकार के बालक अपने ही समूह में रहना पसन्द करते हैं और उनसे ही सम्बन्ध बनाते हैं तथा उनकी रूचियाँ भी समान होती हैं।

v) ऐसे बालकों में इच्छाएँ बड़ी प्रबल होती हैं कि उन्हें सामाजिक मान्यता मिले और सामाजिक अन्तःक्रिया भी हो। इस इच्छा की पूर्ति न होने के कारण हीनभावना बहुत अधिक हो जाती है।

vi) श्रवण बाधित बालक भावनात्मक समायोजन में सामान्य बालकों के समान होते हैं। सामान्य बालकों की तरह वातावरण के घटक उनके भावात्मक पक्ष को प्रभावित करते हैं।

vii) वर्तमान समय में बड़ी संख्या में श्रवण बाधित व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में नौकरियाँ कर रहे हैं। कुछ लोगों की शैक्षिक योग्यता भी अधिक होती है तथा वे उच्च पदों पर कार्यरत हैं परन्तु ये प्रबन्धन व्यवस्था में अधिक सफल नहीं हैं। कार्यालयों में एवं हस्तकार्यों में अधिक सफल होते हैं क्योंकि ये कार्य में लगे रहते हैं, क्यों, क्या और कैसे आदि प्रश्नों में नहीं उलझते हैं।

Scanned with CamScanner

5) **अन्य विशेषताएँ (Other Characteristics)**—अध्ययन एवं शोध द्वारा चलता है कि श्रवण बाधित बालकों की मानसिक योग्यता कम होती है त योग्यता एवं समायोजन भी अच्छा नहीं होता। इसका मुख्य कारण यह बालकों में भाषा ज्ञान का अभाव रहता है क्योंकि उनके श्रवण एवं वाक् होती है। श्रवण बाधितों की अन्य विशेषताओं को सामान्यतया छः भागों में किया गया है—

i) **सामाजिक रूप से बाधित (Socially Handicapped)**—ऐसे बालक भली-भांति अपना समायोजन नहीं कर पाते। वातावरण से समायोजन इन्हें अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है जिसके परिणामस्व बालकों के व्यक्तित्व में सन्तुलन नहीं रहता, उनमें कई प्रकार के दोष हैं। इन बालकों की सम्प्रेषण क्षमताएँ समान नहीं होती और वह दूसरों अपनी बात नहीं समझा पाते।

ii) **व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास की समस्याएँ (Problems in Pe and Social Development)**—ऐसे बालकों में भाषा की कठिनाई सबसे होती है जिसके कारण उनके सामाजिक विकास की प्रक्रिया समुचित ढंग से हो पाती है तथा समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाते और कोई स्थान बना पाते है। ये बालक दूसरों पर ही निर्भर रहते हैं। इसलिए हीनभावना अधिक होती है।

iii) **भाषा की कठिनाई (Problems of Language)**—अधिकांशतः ऐसे बालक भाषा की कठिनाई अधिक होती है क्योंकि उन्हें सुनने तथा बोलने दोनों कठिनाई होती है जिससे सामान्य बालकों से समुचित शाब्दिक अन्तःक्रिया होती है। इनकी शब्दावली भी सीमित होती है। अतः इन्हें सांकेतिक भाषा सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार के दोष के कारण यह भाषा का लाभ उठा पाते हैं।

iv) **व्यक्तित्व की समस्याएँ (Problems of Personality)**—श्रवण बाधित होने कारण बालकों में व्यक्तित्व सम्बन्धी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। आंशिक रूप से बाधित बालक प्रयास करते हैं कि वह सामान्य बालकों की अपना व्यवहार करें लेकिन बाधिता के कारण ऐसा करने में असमर्थ होते जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है।

v) **मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ (Psychological Characteristics)**—श्रवण बा बालकों में मनोवैज्ञानिक या व्यावहारिक समस्याएँ अधिक हो जाती है। वे दूसरों की बातें नहीं सुन पाते हैं तब गलत अर्थ लगाकर उसके अनुसार अ व्यवहार करते हैं। सामान्य बालकों की सहानुभूति उनके प्रति कम हो जाती जिससे उनकी व्यावहारिक समस्याएँ बढ़ जाती हैं तथा व्यक्तित्व का विकास जाता है।

vi) **असामान्य भावात्मक व्यवहार (Abnormal Emotional Behaviour** अधिकांशतः ऐसे बालक भावात्मक व्यवहार में असामान्य होते हैं क्योंकि दूसरों बात को नहीं समझ पाते जिससे उनमें तनाव उत्पन्न हो जाता है और उन स्वभाव हठी या चिड़चिड़ा हो जाता है। अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लि वे असामान्य व्यवहार भी करने लगते हैं।

Scanned with CamScanner